

## फसलों को प्रभावित करने वाले पक्षी: एक बड़ी चिंता का विषय



प्रिया<sup>1\*</sup>, धर्मबीर सिंह<sup>1</sup>, अंशु<sup>1</sup>,  
निशा<sup>2</sup>

<sup>1</sup>जंतु विज्ञान एवं जलकृषि विभाग,  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय, हिसार, 125004  
<sup>2</sup>जैव रसायन विभाग, कुरुक्षेत्र  
विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 136119

पक्षियों को परागण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और कीड़ों और कृन्तकों पर अंकुश लगाने के लिए जाना जाता है, लेकिन फसलों को नष्ट करके उनकी पैदावार में कमी का महत्वपूर्ण कारण भी है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी की गई "कृषि में जोखिम प्रबंधन" शीर्षक वाली किसान आय (डीएफआई) पर समिति की अंतर-मंत्रालयी रिपोर्ट से पता चलता है कि पक्षी प्रजातियां बुवाई, अंकुर और पकने के चरणों के दौरान फसलों को नुकसान पहुंचाकर कृषि में नुकसान पहुंचाती हैं, जिससे किसान समुदाय को आर्थिक नुकसान होता है।

### प्रजातियों की संख्या

दुनिया में पाई जाने वाली कुल 9782 पक्षियों की प्रजातियों में से, 1179 प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं और 147 स्थानिक प्रजातियां हैं जिनमें 14 गंभीर, 15 लुप्तप्राय, 54 कमजोर और 64 खतरे में हैं (IUCN, 2010)। 1,364 में से 63 पक्षियों की प्रजातियां कई फसलों को नुकसान पहुंचाती पाई गई हैं जिनमें तोते, ग्रे पार्टिज, ब्लू रॉक कबूतर, और हाउस स्पैरो फसलों को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं। अन्य प्रजातियों में बुनकर, मुनिया और कबूतर शामिल हैं जो कृषि क्षेत्रों के करीब निकटता में घोंसला बनाने का प्रबंधन करते हैं।

### पक्षियों से होने वाले नुकसान

पक्षियों को देश के विभिन्न कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में विभिन्न चरणों के दौरान फसलों की विविधता को काफी आर्थिक नुकसान पहुंचाने के लिए जाना जाता है। फसलों के बुवाई और रोपण से लेकर कटाई तक सभी

चरणों में किसानों को नुकसान हो सकता है। परिपक्व फसलों को सबसे बड़ा नुकसान ब्या, मुनियाज और कौओं जैसी पक्षी प्रजातियों की फोर्जिंग गतिविधियों के कारण देखा गया है। पक्षियों की इन प्रजातियों के अलावा, तोता कृषि परिप्रेक्ष्य से सबसे आम और विनाशकारी पक्षी है जो खड़ी अनाज की फसलों, फलों के बगीचों और सब्जियों की फसलों को भारी नुकसान पहुंचाता है। एक तोता प्रति दिन लगभग 15 ग्राम सूरजमुखी के बीज का उपभोग करता है। ये पक्षी 10% से 40% क्षति का कारण बन सकते हैं और सूरजमुखी के क्षेत्र में एक अलग क्षेत्र में 90% का कारण बन सकते हैं। ये पक्षी क्षेत्र को खराब करने, बोरियों को नुकसान पहुंचाने और अनाज की दुकानों में अपने मल के साथ अनाज को दूषित करने जैसी गतिविधियों के लिए भी जिम्मेदार हैं। मैना, ब्राह्मणी स्टारलिंग, क्रो और बुलबुल जैसे पक्षी फलों की फसलों

को नुकसान पहुंचाते हैं। ये नुकसान न केवल उपज के नुकसान तक सीमित हैं, बल्कि वे फसलों की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, पक्षी समग्र कृषि उत्पादकता में कमी का कारण बनते हैं। क्रो जैसी क्रॉपलैंड पक्षी प्रजातियों की फोर्जिंग गतिविधियों से गेहूं को अधिक नुकसान होता है, जबकि कबूतर और घुघी बाजरा और सूरजमुखी को नुकसान पहुंचाते हैं। इसके अलावा, तोते और कौवे वास्तव में फसलों को उपभोग करने की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। वे अपने साथ ज्वार की गुठली के कुछ हिस्सों को ले जाते हैं और फिर अनाज पर फ्रीड करते हैं। इस तरह से अनाज पर भोजन करते समय, अनाज के साथ कर्नेल का एक बड़ा हिस्सा नीचे गिर जाता है। गौरैया, बुनकर पक्षियों और पैराकीट्स द्वारा ज्वार की फसलों को अधिकतम नुकसान दर्ज किया जाता है जो 52% तक खाते हैं।

किसी भी फसल को पक्षियों की क्षति की सीमा कई कारकों पर निर्भर करती है जैसे स्थानीय पक्षियों की आबादी की एकाग्रता, फसल के तहत कुल क्षेत्र, क्षेत्र के फसल पैटर्न निवास स्थान, पक्षियों के मौसम और शारीरिक स्थिति। इसके अलावा, पक्षियों की क्षति अलग-थलग, शुरुआती या देर से परिपक्व होने वाले क्षेत्रों में अधिक होती है, जो क्षेत्रों, मौसमों, प्रजातियों की संख्या, उनके घनत्व, प्रवासियों की एकाग्रता और उनके भोजन की आदतों के बीच भिन्न होती है।

### **कृषि के लिए लाभकारी पक्षी**

फसलों में कीटभक्षी पक्षियों की उपस्थिति किसानों के लिए फायदेमंद है। कृषि मंत्रालय की एक रिपोर्ट "कृषि में जोखिम प्रबंधन" शीर्षक से 46 पक्षियों की प्रजातियों को कृषि के लिए फायदेमंद के रूप में पहचाना गया है। वे फसलों पर दावत देने

वाले कीड़ों को नष्ट करने में मदद करते हैं और कृन्तकों का भी उपभोग करते हैं। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि इस तरह के लाभकारी पक्षियों को प्रोत्साहित और संरक्षित करने की आवश्यकता है।

### **पक्षियों से होने वाले नुकसान का नियंत्रण**

पक्षियों को डराने की तकनीकों अथवा उपकरणों और कीटनाशकों का उपयोग करके पक्षियों के नियंत्रण के लिए उपायों को तैनात करके पक्षियों से फसलों के नुकसान को कम करने के लिए किसानों द्वारा नियमित रूप से प्रयास किए जा रहे हैं। उपयोग की जाने वाली तकनीकें रासायनिक, दृश्य, बायोएकोस्टिक या ऑप्टिकल रिपेलेंट, नेट और स्पाइक हैं। पारंपरिक तरीके बंदूक की गोली के साथ पक्षियों को गोली मारकर, और पक्षियों को डराने के लिए पटाखों की मदद से

ध्वनि बनाकर हैं। भारत में पक्षियों की हत्या अवैध है, इसके बावजूद यह किसानों के बीच एक मजबूत विश्वास है कि पक्षियों को मारना पक्षियों की समस्या से मुक्त होने का एक निश्चित तरीका माना जाता है और वे उन तकनीकों का उपयोग करते हैं जिनमें शूटिंग, फँसाना, धूमन, जहर चारा, अंडा और घोंसला नष्ट करना, बंदूक की मदद से हत्या करना और उन्हें एक जाल में पकड़ना शामिल है। शिकारी पक्षियों के लिए पारंपरिक प्रबंधन तकनीकों में फसल के खेतों के बीच एक माचन खड़ा करना, घड़े-पुतले (स्केयरक्रॉ), ड्रम की पिटाई शामिल है; आवास हेरफेर, ब्लॉक वृक्षारोपण, पक्षी डराने के लिए चिंतनशील रिबन, चिंतनशील कागज प्लेट, पक्षी प्रतिरोधी संकर, जो पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन विधियों में से कुछ हो सकता है।